efgyk ulcanh
सामुदायिक कार्यकर्त्ता के द्वारा अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

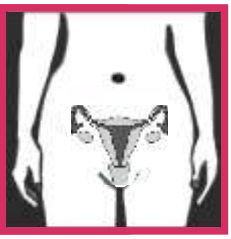

i-1- efgyk dk ulcanh l ;g mEehn gkrh g fd og xHkorh ugh gkxh l vxj ,lk gk] rk dku ftEenkj gkxk l

जब महिला नसबंदी का निर्णय लेती है, तो उसे बताना चाहिए कि भले ही यह स्थायी तरीका है, मगर इसके असफल रहने की कुछ आशंका तो होती ही है। इसमें किसी की गलती नही है, बस यह तथ्य है कि कोई भी उपाय 100 फीसदी प्रभावी नहीं होता। वह चाहे कोई भी गर्भनिरोधक अपनाए, असफल होने का खतरा रहता ही है।

भारत में नसबंदी (और कॉपर टी) से असफलता की आशंका दूसरे उपायों की तुलना में कुछ कम है, पर अभी भी है।

i-2- efgyk ulcanh dc l iHkkoh gkrh g l

महिलाओं की नसबंदी तुरंत प्रभावी हो जाती है।

i-3- D;k dkbZ Hkh efgyk ulcanh djk ldrh g l

कोई भी महिला नसबंदी करा सकती है अगर :

- वह अब या भविष्य में कोई बच्चा नही चाहती।
- अपनी प्रजनन क्षमता समाप्त कराने की सलाह उसे ठीक से समझ आ गई है और उसने लिखित सहमति पर हस्ताक्षर कर दिए हैं।
- सभी महिलाएं नसबंदी करवा सकती हैं, जिनमें वे भी शामिल हैं, जिन्हें उच्च रक्तचाप है, जिनमें रक्ताल्पता है, जिन्हें अस्थानिक गर्भ ठहरा है या जिन्हें अनियमित रक्तस्राव होता है। हालांकि कुछ परिस्थितियों में प्रक्रिया कुछ दिन रोकी जा सकती है। यह डॉक्टर बताएगा किन्हें नसबंदी से पहले इलाज की आवश्यकता है।

i-4- izlo d ckn dc ulcanh gk ldrh g l

प्रसव के तुरंत बाद या प्रसव के सात दिन के भीतर नसबंदी हो सकती है। अगर पहले 7 दिन में न हो, तो प्रसव के 6 सप्ताह के बाद होनी चाहिए।

गर्भपात के तुरंत बाद (48 घंटे के भीतर) हो सकती है, अगर पहले से ही स्वीकृति दी हो। किसी और समय भी हो सकती है, पर प्रसव के 7 दिन बाद व 6 सप्ताह से पहले नहीं, साथ ही तब भी नहीं, जब महिला गर्भवती हो।

i-5- D;k blls otu c<rk g l

नहीं, नसबंदी से महिला के शरीर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, न वजन बढ़ता है।

i-6- ulcanh d ckn ,d efgyk dk fdruk vkjke djuk pkfg, l

कम से कम दो दिन। इसके अलावा भारी काम–काज व वजन उठाने से भी कम से कम एक सप्ताह बचना चाहिए (इससे ज्यादा देर भी लग सकती है) जब तक इन कार्यों से कोई दर्द हो, तब तक आराम करें।

i-7- ljdkj ulcanh d fy, udn iSlk n jgh g l vki fdruk nxs l

नसबंदी के लिए सरकार की अपनी प्रोत्साहन नीति है, पर यू.एच.आई की ऐसी कोई योजना नहीं है। यू.एच.आई सरकार को सहयोग दे रही है, अपनी कोई संमांतर व्यवस्था नहीं चला रही।

i-8- efgyk ulcanh djku d ckn D;k iV ea xSl cuuh yxrh g l

महिलाओं को समझाते और शिक्षित करते समय नसबंदी की विशेषताएं व इसके कुप्रभाव भी बताएं। नसबंदी से न पेट खराब होता है, न कोई कुप्रभाव होता है। किसी भी नए इलाज या प्रक्रिया के बाद मरीज अपने स्वास्थ्य के किसी भी बदलाव के लिए उसे दोष देने लगता है। यह स्वाभाविक है। इसलिए यह स्पष्ट करना जरूरी है कि इस इलाज से क्या उम्मीद करें, क्या नहीं। वे जब समस्या लेकर आएं, जो कि नसबंदी के कारण नहीं है, तो उनकी चिकित्सीय सहायता व इलाज में मदद करें, पर यह भी बताएं कि इसका नसबंदी से कुछ लेना–देना नहीं है। समुदाय व महिलाओं को शिक्षित करने व गर्भनिरोधकों के लिए आधार तैयार करने में समय लगता है।

i-9- D;k ulcanh d ckn efgyk o iq#"k nifr lq[kh ok\$okfgd thou fcrk ldr g l

यह प्रक्रिया आपकी शक्ति, स्वास्थ्य, भविष्य में माहवारी, यौन क्षमता व यौन सुख को प्रभावित नहीं करती। शुरू में एक सप्ताह यौन संबंध न बनाएं या तब तक जब तक कि महिला दर्द का अनुभव करे। पुरुष की नसबंदी की स्थिति में 2 या 3 दिन यौन संबंध न बनाएं।

i-10- D;k ulcnh l ekgokjh Hkh cn gk tkrh g

महिला की नसबंदी से ऐसा नही होता।

i-11- D;k ulcnh e fujrj jDrlko gkrk g |

महिला की नसबंदी में निरंतर रक्तस्राव नही होता।

i-12- D;k ulcnh l dkb vkj jkx gk ldrk g

नसबंदी कराने से कोई रोग नहीं होता। जैसे–जैसे महिला की उम्र बढ़ती है, उसको स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती है, पर इनका नसबंदी से कोई लेना–देना नही है।

i-13- gekj elfye lenk;k e ,fPNd ulcnh [kklrkj l efgyk;k dk euk g | ;g Hkh dgk tkrk g fd ulcnh d ckn efgyk uekt ugh i< ldrh |

नसबंदी के अलावा भी और गर्भनिरोधक है, जो इसी के समान प्रभावी है, मगर वे स्थायी नहीं हैं। बहुत से मुसलिम देशों में कॉपर टी बहुत लोकप्रिय है और लगभग 10 साल तक गर्भ ठहरने से सुरक्षा प्रदान करती है। 10 साल के बाद पुरानी कॉपर टी निकलवा कर तुरंत नई लगवाई जा सकती है।

वैसे कुरान नसबंदी या किसी भी दूसरे गर्भ निरोधक के अपनाने के खिलाफ नहीं है। जब कुरान लिखी गई, तब बच्चे के जन्म को रोकने की कोई अवधारणा नहीं थी। कुरान कहती है कि बच्चों के उचित पालन–पोषण की जिम्मेदारी माता–पिता की है, साथ ही एक पति की जिम्मेदारी है कि वह आर्थिक व भावनात्मक हर तरह से मां की मदद करे, ताकि वह अपने बच्चों को जीवन में बेहतर अवसर दे सके। इसमें 2 साल तक बच्चे को स्तनपान कराने की बात भी कही गई है। इन दोनों बातों से मुसलिम महिला / पुरुष को समझाने में मदद मिल सकती है कि यह तभी हो सकता है, जब बच्चों की उम्र में फासला हो व बच्चों की संख्या भी सीमित हो।

पी.एस.आई के साथ भरतपुर क्षेत्र के मुसलमानों में गर्भ निरोधकों के प्रयोग पर एक अध्ययन हुआ। इसमें पाया गया कि यहां गर्भ निरोधकों की खपत काफी उत्साहजनक है। जाहिर है यहां एफ.पी सेवाओं का प्रोत्साहित किया जा सकता है। यानी मुसलिम समुदायों में नसबंदी सहित गर्भ निरोधक उपायों को बढ़ावा दिया जा सकता है। मुसलिम समुदायों के धार्मिक नेता कुरान के संदर्भ से अगर लोगों को अवगत कराएं, तो गर्भनिरोधक उपायों को अपनाने के लिए लोग आगे आएंगे।